७. अनमोल वचन

– दादू दयाल

गुरु पहली मन सौं कहै, पीछे नैन की सैन ।
दादू सिख समझै नहीं, कहि समझावै बैन ।।

दादू दीया है भला, दिया करो सब कोय ।
घर में धरा न पाइये, जो कर दिया न होय ।।

ना घरि रह्या न बनि गया, ना कुछ किया कलेस ।
दादू मन-ही-मन मिल्या, सतगुर के उपदेस ।।

यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ ।
भीतरि सेवा बंदिगी, बाहरि काहे जाइ ।।

फल पाका बेली तजी, छिटकाया मुख माँहि ।
साँई अपणा करि लिया, सो फिरि ऊगौ नाँहि ।।

दादू इस संसार मैं, ये द्वै रतन अमोल ।
इक साईं इक संतजन, इनका मोल न तोल ।।

मेरा बैरी 'मैं' मुवा मुझे न मारै कोई ।
मैं ही मुझकौं मारता, मैं मरजीवा होई ।।

दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होई ।
जब यहु आपा मरि गया, तब दूजा नहिं कोई ।।

— ० —

परिचय

जन्म : १५४४, अहमदाबाद (गुजरात)
मृत्यु : १६०३
परिचय : गृहस्थी त्यागकर इन्होंने १२ वर्षों तक कठिन तप किया । गुरुकृपा से सिद्धि प्राप्त हुई । 'दादू' के नाम से 'दादू पंथ' चल पड़ा । आप अत्यधिक दयालु थे । इस कारण आपका नाम 'दादू दयाल' पड़ गया । आप हिंदी, गुजराती, राजस्थानी आदि कई भाषाओं के ज्ञाता थे । आपने शब्द और साखी लिखीं । आपकी रचनाएँ प्रेमभावपूर्ण हैं । जाति-पाँति के निराकरण, हिंदू-मुसलमानों की एकता आदि विषयों पर आपके पद तर्क प्रेरित न होकर, हृदय प्रेरित हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'साखी', 'हरडेवानी', 'अंगवधू' आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत 'साखी '(दोहों) में दादू जी ने परोपकार, सद्गुरु का महत्त्व, सेवाभाव, सत्संग, अहंकार से बचने आदि के संबंध में अनमोल मार्गदर्शन किया है ।

कल्पना पल्लवन

'वर्तमान युग की माँग विश्वशांति' पर अपना मत लिखो ।

शब्द वाटिका

सैन = इशारा
बैन = वाणी, शब्द
दीया = दीपक
घीव = घी
कलेस = कष्ट, दुख
बंदिगी = वंदना, सम्मान, पूजा
पाका = पका
द्वै = दोनों
मुवा = मृत, समाप्त
आपा = अहं, घमंड

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) उत्तर लिखो :

१. गुरु अपनी सीख किस प्रकार समझाते हैं ?
२. दान देना क्यों आवश्यक है ?
३. संसार में कौन-से दो रत्न अमूल्य हैं ?
४. दादू जी ने बैरी किसे कहा है ?

(२) पद्यांश में इस अर्थ में आए शब्द लिखो :

१. नयन = -------
२. कष्ट = -------
३. शत्रु = -------
४. मरना = -------

(३) दादू जी द्वारा दी गई सीख

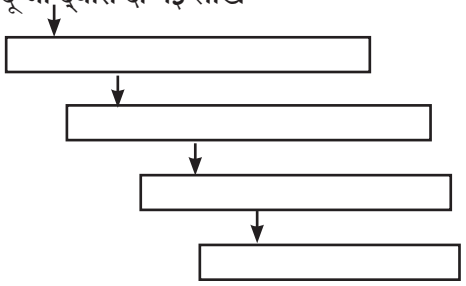

(४) किन्हीं दो पंक्तियों के अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

जीवन में सत्संगति आवश्यक है ।

MI3NS1

भाषा बिंदु

कृदंत और तद्धित शब्दों की सूची बनाकर उनके मूल शब्द अलग करो ।

उपयोजित लेखन

अंतरशालेय नाट्यस्पर्धा में नाटक का मंचन करने हेतु 'ड्रेपरी हाऊस' के व्यवस्थापक को पात्रों के अनुरूप आवश्यक वेशभूषाओं की माँग करते हुए पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

कबीरदास के ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा इन भावों की व्यर्थता दर्शाने वाले दोहों को अर्थसहित लिखो ।